चिड़ा जिन्दा या मुर्दा

एक बर सुथरे शाह जी गुरु दरबार में गए। उस समय श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी अपने तख्त पर बैठकर संगत को उपदेश दे रहे थे कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है, वह ही पालनकर्ता और संहार करने वाला है। यह जीव कुछ नहीं कर सकता।

करन करावन हार सुआमी।
सगल घटा के अन्तर्जामी।।

इस संसार में जो कुछ भी हो रहा है मेरे करतार तेरी शक्ति से हो रहा है। यह नर मूर्ख है जो यह कहता है कि यह काम मैंने किया है।

सुथरे शाह जी ने सतगुरु के यह वचन सुने तो एक चिड़ा पकड़ लाए तथा सतगुरु के चरणों में नमस्कार कर कहने लगे, हे पातशाह! आप घट-घट के जाननहार हो। आप ने फरमाया है कि- 'करे करावे आपै आप, मानव के कुछ नाहि हाथ।'

क्या सचमुच मनुष्य के हाथ कुछ नहीं है? क्या ईश्वर ही सब कुछ करने वाला है? उस समय सुथरे शाह जी ने वो चिड़ा अपने हाथ में पकड़ा हुआ था और अंगूठा उसकी गर्दन पर रखा हुआ था।

'सुथरा' कहने लगा 'क्या हजूर कह सकते हैं कि यह चिड़ा जिन्दा है या मरा हुआ?' सतगुरु जी सुथरे की शरारत समझ गए कि अगर हमने कहा कि यह मरा हुआ है तो इसने हाथ से छोड़ कर उड़ा देना है। अगर हमने कहा कि जिन्दा है तो इसने इसकी गर्दन पर रखा अंगूठा कस लेना है और चिड़ा मार देना है। इसलिए हजूर हँसते हुए बोले, ''सुथरे' तेरी तू ही जाने। तेरे हाथ में आया चिड़ा बस तेरे रहम पर ही है।'